

II-308

धर्मरत्न ब्रज्याचार्य सुरत श्री महाविहार

मिरि न हे ह २ है है ख ख बु व धु न धु न न दे न म हा जा गी नी प
थि न सि ह ३ धु २ गे २ ह २ ह २ हि म ह स २ वि न हा स मू ड म म
हा है २ ते ला क्क वि ना स न स ह मु का टी न थ म ग न ग प नि वा न क
रू ए ह सिं ह रू प य ग रू न प ख गे ला क्क ए न म हा स मू ड म
ख नः य स २ है है ह ह वि ना ल ह है ह ह ॥ म हा प न श्रु मा ह

विद्यागुह्यनीहं सर्वजकिनिनाकानां वन्दित्सर्वप्रत्ययका
निनिहं हं हं ॥ गुं मज्जासतिमहादविपत्रमनिविजयेतिदि
जालागुह्यनीहं हं हं हं हं हं ॥ ॐ तिहदयमनु ॥ इतिमः
धीव ऊनेनास्माहिताष्ट ॥ अथतातगवतिनां गुह्यध्वनिनां

महासिद्धिविद्यानामनुमाहामायागुह्यध्वनि ॥ तेनाय
हन्तैर्योतर्हं पुनः ॥ गुह्यध्वनिनिधनातामाहामाया
तिविधुताः ॥ तैलाय प्राप्तनिविशायदयगुह्यध्वनि ॥
ऊयादिहानमापुनविदत्तं अथकध्वनी ॥ सर्वद्वगन्ध
ध्वनिनामज्जासत्तमानुमान् ॥ विद्याध्वनिध्वनिध्वनि

नाऊसागत्रुजकिन्नगावधमानयन्निशानिऊप्रजस्य
पजानीवमहावर्यकनीवशा०० रुजातकलितथामा
हनसंहनक्षेत्रविद्याषाद्वेनादिकंदस्याकसनऊम्लने
चम्रनकविचेकीरुहत्रं॥ पथिताकुत्तविद्यावाचासिद्धि
वसाश्चक॥ नऊपन्नवततस्यानादासाविधिभियग॥ अंक

[illegible]

पिवताः श्रुतिप्रयश्च कृतविभक्तः पृथ्वानावसेजाय
ताः धीनेनात्माध्यानः ॥ भुक्मुखमकटकः ॥ शीतप्रदिशु
कवामखद्योगदहिनपाप्रविन्दुपापपर्यंकतिप्रकंकम
वर्षपध्वगुनघातिंसववचनाहाहाकानिकममासनने

लाव्यमातामृजवेज्ञानवेदधारीनन्देद्यमानुःमिमिमि
नीमिति। मित्रिलिहुरुद्रवरध्वः ध्रुध्रुः मन्त्र
न्नुद्धतजसहागुच्छध्वरीप्रत्यसिद्धिः॥ ईशैर्यैरथरगे
हरतिमहसरविवरहरहराहारकुकुके गौलाव्य प्रत्य

रुद्रस्वाहा॥ ॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
रुद्रस्वाहा॥ ॥ ॥

रुद्रस्वाहा॥ ॥ ॥

II-308